॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रभु! तू कल्याण करने वाला है। तूने ऋषि-मुनियों का कल्याण किया है। विधाता! तू हमारा भी कल्याण कर। तू हमें भी यहाँ से ले चल, जहाँ एक-दूसरे की त्रुटि हो, एक-दूसरे पर क्रोध न्यौछावर किया जाता हो यह संसार मुझे नहीं चाहिए। मुझे तो वह कजली वन चाहिए जिस कजली वन में सिंह दहाड़ते हों। जहाँ हाथी ध्वनियाँ कर रहे हों। जहाँ विधाता! नाना सिंह ध्वनियाँ करते-करते उस अमूल्य आत्मा के द्वारा, वेदों का श्रवण करने वाले हों। आज के मानव से ये सिंह ऊँचे हैं जो ऋषि-मुनियों की वार्त्ता का पान करते हैं।

हे प्रभु! मेरा अङ्ग-प्रत्यंग, सर्वत्र इन्द्रियाँ यज्ञमय हों। मेरे जीवन का एक-एक सङ्कल्प यज्ञमय हो। आज मैं विकल्पों में नहीं जाना चाहता, जो जीवन को नष्ट कर दें। परन्तु प्रभु! मुझे अपने सङ्कल्पों को यज्ञमय बनाने के लिए सहायता की आवश्यकता है। जैसे यज्ञशाला को रचाने के लिए यजमान की आवश्यकता है। जैसे यज्ञशाला को रचाने के लिए यजमान को ब्रह्मा की आवश्यकता है। इसी प्रकार आज अपने जीवन को यज्ञमय बनाने के लिए किसी की सहायता लेना चाहता हूँ। परन्तु मुझे कोई ऐसा प्रतीत नहीं देता जिसकी में सहायता लूँ, मुझे तो केवल प्रभु ही ऐसा प्रतीत देता है जिसका यह संसार यज्ञ है। मैं उस परमपिता परमात्मा को अपना स्वामी बनाना चाहता हूँ। मैं किंचित् बुद्धि वाला एक यजमान बनना चाहता हूँ।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 576 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 651
वर्ष : 49 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. यज्ञ विधान और विज्ञान	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-23
4. द्यौ लोक का घृत	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-28
5. द्यौ लोक को समिधाएँ एवम् वृष्टि यज्ञ	पूज्यपाद-गुरुदेव	29-34
6. ऋषियों के उद्‌गार		35
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		36-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

आप सभी को नव-वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

॥ ओ३म् ॥

यज्ञ विधान और विज्ञान

जीते रहो!

आज मुनिवरों! देखो संसार में इस प्रकार के बहुत से वाक्य हैं जो हमारी बुद्धि से पृथक् हैं। पृथक् होते हुए भी वे हैं अवश्य और उनका अस्तित्व भी है। आज हमारे वेद-पाठ में दो प्रकार के यज्ञों का वर्णन हो रहा था। एक यज्ञ आत्मिक होता है और दूसरा भौतिक। अहा! भौतिक यज्ञ कैसे करें? इस पूजा को कैसे कल्याणकारी बनायें? यह ही मानव का विचारणीय विषय है। हमारे आदि ब्रह्मा ने एक वाक्य कहा था कि बेटा! तुम संसार में जा तो रहे हो पर संसार की स्थिति तो जानो। वहाँ जाकर अपने उच्च विधान से कार्य करोगे तो तुम्हारा विधान उच्च रहेगा। अन्यथा तुम्हारा विधान सब सूक्ष्म बन जाएगा। यदि प्रजा या एक दूसरे प्राणी को ऊँचा बनाना है तो पूर्व स्वयं ऊँचे बनो। यज्ञ करना है और यज्ञ द्वारा प्रजा को लाभ पहुँचाना चाहते हो तो सबसे पूर्व यज्ञ को विधान से रचाओ। उन सब क्रियाओं से रचाओ जो हमारे महर्षियों ने वर्णन की हैं और वेदों के अनुकूल हैं। बिना विधान यज्ञ करने से यज्ञ न करने के बराबर हो जाता है।

मुनिवरों! एक समय हमारे महानन्द मुनि ने प्रश्न किया था कि यज्ञ की कितनी प्रकार की परिपाटी होती है और यज्ञ का कैसा विधान होता है। आज वेद का वही प्रकरण आ गया है जो महानन्द जी ने अब से बहुत पूर्व प्रश्न किया था। तो मुनिवरों! आज का वेद पाठ यही उत्तर दे रहा है कि यदि यज्ञ रचाओ तो उसकी क्रियाओं को पूर्व ही जान कर करो। सूक्ष्म यज्ञ रचाओ या विशाल यज्ञ, उसके लिए पहले से ही उच्च विधान बनाने की आवश्यकता है। उसके लिए सुन्दर तथा महान् योजना बनाओ। जिससे तुम्हारे लिए सभी प्रकार के देवता लाभदायक हों, जिन्हें आह्वान करके हव्य पदार्थ अर्पण करना चाहते हो। इससे हमारा वाक्य केवल यह नहीं कि आज हम हव्य से ही इस सुविधा को बनायें। ऊँची भावनाएँ बनाओ और ऊँची भावनाओं से देवताओं का अच्छी प्रकार पूजन करना चाहिए। क्योंकि हम जब तक किसी ऊँचे

व्यक्ति के लिए या ऊँचे देवताओं के लिए सुन्दर कार्य नहीं करते तब तक वह देवता हमें न कोई महत्त्व, न वाणी, न प्रकाश, न प्राण ही प्रदान करेंगे।

इसलिए मुनिवरों! **यज्ञ करो तो विधान से करो और चुनकर करो।** उद्गाता चुनो, अध्वर्यु चुनो, ब्रह्मा चुनो और यज्ञमान चुनो। मुनिवरों! यज्ञमान के विधान में ऐसा कहा गया है कि हमारे महर्षियों ने आदि ब्रह्मा ने तथा महर्षि तत्वेतु मुनि महाराज ने ऐसा कहा है कि यज्ञमान की धर्मपत्नी के बिना यज्ञ सफल नहीं होता। ऐसा ही बेटा! राजा रावण ने राजा राम के यज्ञ कराते समय कहा था कि ''जब तक तुम्हारी धर्मपत्नी न होगी तब तक यज्ञ की क्रिया अच्छी प्रकार न होगी और हे राम! तुम्हारा यज्ञ कदापि सफल नहीं होगा।'' तो मुनिवरों! आज महानन्द जी प्रश्न कर रहे हैं कि उन्होंने यज्ञ किस प्रकार किया और कैसे किया!

मुनिवरों! उसका कुछ सूक्ष्म रूप हम तुम्हारे आगे आज वर्णन कर रहे हैं। यज्ञ जो होना चाहिए विधान के अनुकूल ही होना चाहिए जिससे मानव का जीवन ऊँचा बने। यह जो मानव का शरीर है यह भी एक प्रकार का यज्ञ है। आज तुम इस शरीर रूपी यज्ञ के लिए नाना प्रकार की अशुद्ध आहुतियाँ देते रहो, अशुद्ध भोजन देते रहो तो यह तुम्हारा शरीर रूपी यज्ञ नष्ट हो जाएगा। तुम्हारा जीवन भी नष्ट हो जाएगा। यदि तुम शरीर को अच्छा पदार्थ नहीं दोगे तो वह तुम्हें कदापि अच्छी बुद्धि नहीं देगा। तो मुनिवरों! जो तुम यज्ञ करो उसमें शाकल्य भी महान् ऊँचे होने चाहिएँ। जैसे परमात्मा ने हमारे शरीर को विधान से बनाया है इसमें वायु भी है, अन्तरिक्ष भी है, इसमें बेटा! जल भी है, पृथ्वी भी है, सब कुछ है। ये सब एक साथ कार्य करते हैं यदि मुनिवरों! एक भी विधान परमात्मा पृथक् कर दे तो हमारे शरीर का हरिओम तत्सत् हो जाएगा। तो मुनिवरों! यह हमारा आज का आदेश था कि यज्ञ करो तो विधान से करो। देव यज्ञ करने की मनोइच्छा है तो प्रत्येक मानव प्रत्येक देव कन्या को विधान से करना चाहिए।

मुनिवरों! अभी-अभी त्रेता के समय का एक वाक्य हमारे कंठ आ गया है जो महानन्द जी ने बहुत पूर्व प्रश्न किया था। वर्णन तो बहुत विशाल है। इसका वर्णन अन्यत्र कहीं बड़ा विशाल होगा। अब तो तुम्हें केवल त्रेता के

समय का वर्णन सुनाये देते हैं। वह क्या है? वह मानव के जीवन को ऊँचा बनाने वाला है। आज प्रायः मानो महानन्द जी के कथनानुसार वह अशुद्ध माना जाता है परन्तु हम तो महर्षि बाल्मीकि जी के अनुकूल अपने कथन को प्रारम्भ कर रहे हैं। महर्षि बाल्मीकि ने ऐसा कहा है कि जब राजा राम अपने महान् शिष्य गणों को लेकर! सुग्रीव की सेना को लेकर समुद्र तट पर जा पहुँचा वहाँ उनके दो बहुत बड़े वैज्ञानिक थे। जिनको बेटा! नल और नील कहते थे। जो शिल्प विद्या बहुत ही अच्छी प्रकार जानते थे। उन दोनों वैज्ञानिकों ने समुद्र का शेष (पुल) बाँधना प्रारम्भ किया तो मुनिवरों! इसके पश्चात् ऐसा कारण बना जिससे रावण को विदित हो गया कि राम संग्राम करने को विराज रहा है। इस पर वह विचारने लगा कि मुझे क्या करना चाहिए। बेटा! यह तो हमने तुमसे पूर्व ही वर्णन किया था कि राजा रावण बहुत ही बुद्धिमान था। वह चारों वेदों का ज्ञाता था वह अपनी क्रियाओं को भी भली-भाँति जानता था।

शासक और दुराचार राजा और राजनीति

तो मुनिवरों! हमने कुछ ऐसा सुना है कि रावण ने अपने विधाता विभीषण को कंठ (याद) किया और मंत्री से कहा जाओ आज विभीषण को मेरे समक्ष लाओ, उनसे में कुछ वार्ता उच्चारण करूँगा। तो उस समय बेटा! वह मन्त्री जी बहते भये विभीषण के द्वार जा पहुँचे। उस समय विभीषण ने कहा, आज कैसा सौभाग्य है जो मेरे विधाता ने जो परमात्मा के बड़े विरोधी हैं, मुझे कंठ किया है। मैं तो परमात्मा का बड़ा प्रिय हूँ। उस समय वह अपना सौभाग्य मनाते हुए राजा रावण के समक्ष जा पहुँचे। राजा रावण ने कहा, ''आइए विधाता, विराजिए।'' तब विभीषण ने कहा, मेरे योग्य कौन सेवा है, विधाता? आप तो परमात्मा के विरोधी हैं आपने आज परमात्मा के भक्त को अपने समक्ष बुलाया है यह क्या बात है?

उस समय रावण ने कहा, नहीं-नहीं विधाता! मैं तो तुमसे कुछ प्रार्थना कर रहा हूँ। मेरी एक इच्छा है आज राम मुझसे संग्राम करने आ रहा है। पूर्व तो मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम प्रिय परमात्मा के भक्त हो, नित्य प्रति ओ३म् का जप किया करते हो, मैं यह जानना चाहता हूँ कि मैं राम पर विजय पा सकता हूँ या नहीं?

उस समय बेटा! विभीषण ने यह कहा था कि 'हे भगवन! आप सात जन्म धारण करेंगे तब भी राम से विजय प्राप्त नहीं कर सकते।'

उस समय रावण ने कहा–''यह कैसे हो सकता है?''

उस समय विभीषण ने कहा–'विधाता! वह जो राम हैं बड़े वैज्ञानिक हैं, बड़े बलवान हैं।'

रावण ने कहा, 'अरे! हम भी तो वैज्ञानिक हैं।'

उस समय विभीषण ने कहा, 'महाराज! आपके विज्ञान और उनके विज्ञान में कुछ भिन्नता है।'

रावण क्या भिन्नता है?

विभीषण 'हे विधाता! राम के द्वारा दोनों ही पदार्थ हैं। देखो आत्मिक सत्ता भी और वैज्ञानिक सत्ता भी। दोनों सत्ताओं से वह तुम्हें विजय कर सकता है।'

उस समय रावण ने कहा, 'तो हमें क्या करना चाहिए।'

उस समय विभीषण ने कहा–'मेरी इच्छा तो यह है देखो, यह तो पूर्व ही नियम है कि जिस राजा के राज्य में दुराचार होता है या जो राजा किसी कन्या या देवी का हरण करता है। उस राजा का राज आज नहीं तो कल अवश्य समाप्त हो जाता है। हे भगवन! आपका तो विनाश होने वाला है। यह तो मुझे पूर्व ही विदित हो रहा था। यदि आप मेरी याचना को स्वीकार करें तो विधाता! माता सीता को ले जाइए और राम के चरणों का जाकर स्पर्श कीजिए। वे आपको अवश्य तथास्तु करेंगे।'

उस समय जब रावण ने अपने विधाता से यह वाक्य सुना तब उसने क्रोध में आकर कहा, 'अरे विधाता! तुम मेरे विधाता नहीं शत्रु हो। क्या मैं अपने शत्रु के चरणों का स्पर्श करूँ'?

उस समय बेटा! देखो, जब विनाश का समय आता है तब बुद्धि उसी प्रकार बन जाती है। रावण ने अपने पदों की ठोकर से अपने विधाता को ठुकराना प्रारम्भ कर दिया।

उस समय विभीषण ने कहा, 'नहीं विधाता! मैं आपके हित की बात कर रहा हूँ।'

उन्होंने कहा, 'अरे! मैं हित की बात नहीं चाहता। जाओ तुम भी वहीं चले जाओ जिसकी तुम आज मुझसे प्रशंसा कर रहे हो।'

देखो मुनिवरों! उस समय जब रावण ने उन्हें अपने राष्ट्र में न रहने दिया तब वह बहते भये, समुद्र पार कर राम के समक्ष जा पहुँचे। राम ने उनका सब परिचय लिया। विभीषण ने अपने जीवन की जो भी घटनाएँ थीं उन सबका वर्णन किया और कहा, 'महाराज! मैं आपकी शरण आया हूँ।' तब राम ने अपनी शरण दे दी।

बेटा! वह वहाँ बड़े आनन्दपूर्वक रहने लगे। कुछ समय पश्चात् राम ने विभीषण से कहा, ''हे विधाता! मैं एक वार्ता जानना चाहता हूँ आप रावण के विधाता हैं, मैं रावण से संग्राम करने जा रहा हूँ क्या मैं उससे विजय पा सकूँगा?''

उस समय उन्होंने कहा, ''हे विधाता! हे राम! आप मेरी अनुमति लेते हैं तो मेरी यह अनुमति है कि आप सात जन्म भी धारण करेंगे तो भी रावण से विजय न प्राप्त कर सकेंगे।''

उस समय राम ने कहा, 'यह क्या है? क्यों विजय नहीं पा सकूँगा? क्या विशेषता है उसमें?

उस समय विभीषण ने कहा, ''हे राम! वास्तव में तो रावण के पुत्र नारायन्तक आदि बड़े बलवान हैं। इसके अतिरिक्त रावण स्वयं ही बड़ा ज्ञानी और बलवान तथा वैज्ञानिक है। उसके पुत्रों में भी यही विशेषताएँ हैं। राजा रावण का पुत्र नारायन्तक बड़ा विज्ञानी है उसने विज्ञान के महान् यन्त्रों की खोज की है, वह तुम्हारा विनाश कर देगा। इन सब को भी त्याग दिया जाए तो इसके पश्चात् रावण के गुरु शिव महाराज हैं जो कैलाशपति हैं।''

बेटा! शिव किसको कहते हैं? शिव तो परमात्मा को कहते हैं परन्तु यहाँ तो बेटा! ऋषि बाल्मीकि के कथनानुसार ऐसा उच्चारण किया जाता है कि राजा शिव जिसका संस्कार राजा हिमाचल के द्वारा माता पार्वती के समक्ष हुआ

था वह, कैलाशपति थे। जिसकी प्रजा कैलाश के तुल्य हो और प्रजा महान् हो। मुनिवरों! उस राजा का नाम शिव होता है। जिस राजा के राष्ट्र में ज्ञान एवं विज्ञान से, आत्मिक बल से, वेदों के स्वाध्याय से, जिसकी प्रजा बहुत ऊँची हो। जिसके राष्ट्र में देवकन्याएँ और मानव बहुत उच्च भावना वाले हों अर्थात् कैलाश पर्वत जैसी ऊँची भावना वाली प्रजा हो बेटा! उस प्रजा के स्वामी को शिव कहा जाता है।

मुनिवरों! शिव तो परमात्मा को कहते हैं और सूर्य का नाम भी शिव है। जो हम पूर्व ही उच्चारण कर चुके हैं। आज तो कोई प्रकरण नहीं चल रहा है। तो मुनिवरों! राजा रावण के गुरु राजा शिव थे जिनकी प्रजा बहुत ऊँची थी, बहुत वैज्ञानिक थी।

विभीषण : ऐसा राजा जो रावण की सहायता करता हो उस राजा की विजय क्यों न होगी? हे राम! रावण के समक्ष चाहे जितने राम आ जाओ तब भी आप रावण से संग्राम में विजय नहीं पा सकोगे।

उस समय राम ने कहा, 'तो हे विधाता! मुझे क्या करना चाहिए? मुझे तो विजय पानी ही है।'

उन्होंने कहा, 'भगवन! आप अजयमेध यज्ञ कीजिए और यदि यज्ञ विधान द्वारा किया गया तो आपकी विजय अवश्य होगी।

उस समय राम ने कहा, 'मैं अवश्य करूँगा। क्या शिव मुझसे प्रसन्न हो जाएँगे?'

उस समय बेटा! विभीषण ने कहा, 'विधाता! यदि आप अजयमेध वह यज्ञ करेंगे और शिव को निमन्त्रण के अनुकूल नियुक्त करोगे तो आप सब के समक्ष आ जाएँगे। आप अवश्य विजय पाएँगे'।

उस समय बेटा! राम ने विभीषण के आदेशानुसार वहाँ सब सामग्री जुटाना प्रारम्भ कर दिया। जब सब सामग्री घृत आदि वहाँ एकत्रित होने लगा। बुद्धिमानों को आमन्त्रित किया गया उस समय विभीषण ने कहा कि हे राम! यदि यह सब सामग्री भी जुट जावे परन्तु जब तक यज्ञ का ब्रह्मा, रावण नहीं बनेगा तब तक आपका यज्ञ सफल नहीं होगा।

उस समय राम ने कहा, 'विधाता! यह कैसे होगा? मेरा शत्रु मेरे समक्ष कैसे आएगा?'

उन्होंने कहा कि देखो! रावण इतना ज्ञानी है वास्तव में तुम निमंत्रण देने जाओ तो वह स्वयं आ जाएँगे और तुम्हारे यज्ञ को अवश्य सफल करेंगे।'

मुनिवरों! महर्षि बाल्मीकि जी ने यह ऐसा वर्णन किया है कि विभीषण तो अपने स्थान पर चले गए और सामग्री जुट जाने के पश्चात् बेटा! राम और लक्ष्मण ने रावण को निमन्त्रण देने की योजना बनाई। दोनों वहाँ से बहते हुए रावण के द्वार जा पहुँचे। रावण ने बेटा! इससे पूर्व राम को कदापि नहीं देखा था। इसलिए रावण को उनकी कोई पहिचान न हो सकी। इस समय रावण अपने न्यायालय में विराजमान होकर न्याय कर रहा था। उस समय के न्याय को पाकर राम ने लक्ष्मण से कहा, 'रावण तो बड़ा नीतिज्ञ है। देखो! कैसा सुन्दर न्याय कर रहा है। धन्य हो। विधाता को निमन्त्रण दें तो कैसे दें'। उस समय वह वहाँ कुछ समय शान्त विराजमान हो गए। न्यायालय में जब रावण का न्याय समाप्त हो गया तब वे उनके समक्ष पहुँचे।

राम के आमन्त्रण पर रावण का धर्माचरण

उस समय रावण ने कहा, 'कहिए भगवन! किस प्रकार बहते हुए आए हैं। क्या याचना है?'

उन्होंने कहा, 'भगवन! हम एक अजयमेध यज्ञ कर रहे हैं। वेदों के अनुकूल आप हमारे यज्ञ को पूर्ण कीजिए।'

रावण ने कहा-'तथास्तु! जैसी तुम्हारी इच्छा होगी वैसा ही किया जाएगा।'

उस समय राम ने कहा, 'भगवन! समुद्र तट पर यज्ञ हो रहा है और हम आपको निमन्त्रित कर चुके हैं। हे विधाता! हम कल नहीं आ सकेंगे। तृतीय समय में आप स्वयं वहाँ विराजमान हो जाना।'

उस समय बेटा! रावण ने देखो! राम की उस याचना को स्वीकार कर लिया। वहाँ से वे दोनों विधाता बहते हुए समुद्र तट पर आ पहुँचे।

मुनिवरों! अब हमने महर्षि बाल्मीकि के मुखारविन्द से ऐसा सुना है और हमारे महर्षि लोमश मुनि महाराज ने ऐसा देखा भी है। जब राम और लक्ष्मण दोनों अपने स्थान पर पहुँच गए तो वहाँ उन्होंने यज्ञ की सब सामग्री घृत आदि को एकत्रित किया और बड़ी सुन्दर यज्ञशाला बनाई। ऐसी सुन्दर यज्ञशाला बनाई जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

मुनिवरों! ऐसा विदित होने लगा जैसे ब्रह्मलोक से ब्रह्मा आ पहुँचा हो। अब देखो! द्वितीय समय भी समाप्त हो गया। तृतीय समय आ पहुँचा। अब रावण की वहाँ प्रतीक्षा होने लगी। कुछ समय के पश्चात् बेटा! रावण भी अपने पुष्पक विमान में विद्यमान होकर के उस महान् भूमि पर आ पहुँचे। जहाँ राम ने यज्ञशाला का निर्माण किया था। मुनिवरों! वह वहाँ आ पहुँचे तो उन दोनों विधाताओं ने, प्रजा ने उनका बड़ा स्वागत किया। आते ही बेटा! राम ने! उसे अजयमेध यज्ञ का ब्रह्मा नियुक्त कर दिया।

मुनिवरों! ब्रह्मा चुने जाने के पश्चात् जब वहाँ यज्ञोपवीत धारण किए जाने लगे उस समय रावण ने उन सबका परिचय लिया। उस समय उन्होंने कहा, ''भगवन! हमें राम कहते हैं'', ''हमें लक्ष्मण कहते हैं'' जब उन्होंने अपना व्यक्तित्व उच्चारण किया तो रावण बड़े आश्चर्य में रह गया। अरे यह क्या हुआ? यह तो बड़ा आश्चर्यजनक कार्य हुआ। उस समय उन्होंने कहा, अरे! चलो जब तुम्हें ब्रह्मा चुना है तो तेरा कर्त्तव्य है कि विधि विधान से यज्ञ पूर्ण कराओ। उस समय उन्होंने कहा, 'धन्यवाद! अहो तुम्हारी धर्म पत्नी कहाँ है'?

उस समय राम ने कहा, 'विधाता! मेरी धर्मपत्नी तो आपके गृह लङ्का में है।' उस समय मुनिवरों! रावण ने कहा, अरे! मैंने यज्ञ को विधान से नहीं किया तो मैं देवताओं का महापापी बन जाऊँगा। मुझे अजयमेध यज्ञ का ब्रह्मा इन्होनें बनाया है। मुझे परमात्मा ने बुद्धि दी है मेरा कर्त्तव्य केवल एक ही है। मैं सीता को लाऊं और यज्ञ को विधान से पूर्ण करूँ।

महर्षि बाल्मीकि ने ऐसा कहा है कि वह वहाँ से अपने पुष्पक विमान में विद्यमान होकर लङ्का में सीता के द्वार जा पहुँचे और सीता से कहा, 'हे सीते, तेरा स्वामी यज्ञ रचा रहा है समुद्र तट पर चलो।'

उस समय सीता ने कहा, हे रावण, आप नित्यप्रति मिथ्या ही उच्चारण किया करते हो? किसी समय सत्य भी उच्चारण किया करते हो?'

'नहीं, नहीं सीते! मुझे तेरे स्वामी ने उस यज्ञ का ब्रह्मा चुना है।'

सीता ने जब इस आदेश को पाया तो प्रसन्न हो गई और उसके पुष्पक विमान में विद्यमान हो उसी स्थान पर जा पहुँचे जहाँ विशाल अजयमेध यज्ञ करने का विधान बनाया गया था। वहाँ जाकर बड़े आनन्द से सीता, राम के दक्षिण विभाग में विद्यमान हो गई और रावण अपने दक्षिण विभाग में यज्ञ का ब्रह्मा बन गया। इसके पश्चात् यज्ञ आरम्भ होने लगा। मुनिवरों! जब तक विधान से ऋत्विज नहीं चुने जाएँगे चाहे कैसा भी यज्ञ हो वह लाभदायक नहीं होगा।

वहाँ आनन्दपूर्वक ऋत्विज चुने गए। वहाँ अध्वर्यु आदि भी चुने गए। यज्ञोपवीत धारण किए और यज्ञ आरम्भ होने लगा।

तो मुनिवरों! हमने ऐसा सुना है कि महर्षि बाल्मीकि के अनुसार तथा महर्षि लोमश मुनि के निर्णय अनुसार उन्होंने यज्ञ को देखा था कि यह यज्ञ इसी प्रकार चलता रहा।

मुनिवरों! जिस समय यज्ञ की पूर्णाहुति होने वाली थी उस समय सीता ने राम से कहा, 'हे राम! आप यज्ञ तो रच रहे हैं परन्तु रावण के लिए आपके पास कुछ दक्षिणा भी है या नहीं?'

तब राम ने सीता से कहा, 'हे सीते! मेरे पास क्या है, मैं उन्हें क्या दक्षिणा दूँ।'

सीता ने कहा, 'ये तो बड़ा द्रव्यपति राजा है। इसके यहाँ तो स्वर्ण तक के गृह हैं। मणियों के ढेर लगे रहते हैं। तो यह कार्य कैसे सम्पूर्ण होगा?'

राम 'तो मैं क्या करूँ?'

उस समय बेटा! सीता ने क्या किया। उसके पास एक कौड़ी जूड़ा था वह उसने राम को दिया और कहा, 'लीजिए महाराज! आप ब्रह्मा (रावण) का स्वागत इससे कीजिए।'

देखो बेटा! सीता का यह कौड़ी जूड़ा राम ने स्वीकार कर लिया।

अब मुनिवरो देखो। यज्ञ चलता रहा। पूर्णाहुति होने के पश्चात् वहाँ बेटा! यथा शक्ति स्वागत होने लगा। राम और सीता दोनों उस कौड़ी जूड़े को लेकर रावण के समक्ष जा पहुँचे। रावण ने कहा, 'हे राम! मुझे विदित होता है जैसे यह कौड़ी जूड़ा सीता का हो।' उस समय सीता ने कहा, 'विधाता! यह कौड़ी जूड़ा मेरा क्या है यह तो शुभ कार्य है। यह तो मेरे पिता दशरथ ने किसी समय मेरे लिए आभूषण बनवाया था। आज यह आपके इस शुभकार्य में काम आ गया। मेरा क्या है?' उस समय रावण ने कहा, 'हे सीते! मुझे तुम्हारी यह दक्षिणा स्वीकार है। परन्तु मैं किसी के शृंगार को भ्रष्ट नहीं करना चाहता।

जब मुनिवरों! रावण ने यह वाक्य कहा तो प्रजा सन्न रह गयी और कहा, 'अरे! रावण तो बड़ा बुद्धिमान है।' उस समय बेटा! वहाँ यज्ञ पूर्ण हो गया। पूर्ण होने के पश्चात् रावण ने कहा था, ''हे राम! विदित होता है कि तुम्हारी मनोकामनायें अवश्य पूरी होंगी।''

आशीर्वाद देकर सीता से कहा, 'हे सीते! यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम अपने पति की सेवा करो, नहीं तो मेरी लङ्का को चलो।'

धर्म और यज्ञ का फलदायी महात्म्य

उस समय सीता ने कहा, 'हे विधाता! आज से तो तुम मेरे पिता ब्रह्मा बन गए हो। मुझे तो यहाँ भी ऐसा और वहाँ भी ऐसा। मैं आपके द्वार चलूँगी।'

मुनिवरों! इसका नाम धर्म है। राम ने भी यह नहीं कहा कि सीते तू कहाँ जाती है? तब वह बेटा! रावण के साथ पुष्पक विमान में विद्यमान हो गई। रावण ने उस समय ऋग्वेद का मन्त्र उच्चारण करते हुए सीता से कहा था, 'हे सीते! आज मुझे विदित होता है कि मेरे विनाश का समय आ गया है, मेरी लङ्का नष्ट-भ्रष्ट होने वाली है।'

सीता ने कहा, 'हे विधाता! आप इतने व्याकुल क्यों हो रहे हैं?' उन्होंने कहा, 'हे सीते! मेरी जो महान् प्रजा है समाप्त होने वाली है। जो शत्रु बना बैठा है, जिसने शत्रु को अपना लिया और अपना कर उसको ब्रह्मा बना करके

उसकी आत्मिक ज्योति को खींच लिया। हे सीते! उसकी मनोकामना क्यों न पूरी होगी? आज मुझे विदित होता है कि मुझे यह यज्ञ पूर्ण नहीं करना था। यज्ञ पूर्ण होने से मुझे विदित हो गया कि मेरी लङ्का में एक भी मानव नहीं रहेगा।' यह वाक्य उच्चारण करते हुए रावण बड़ा शोक युक्त हो गया।

यह है बेटा! आज का हमारा आदेश। हम उच्चारण कर रहे थे कि मानव को अगर दूसरे को लाभ पहुँचाना है। दूसरों को उन्नति पर पहुँचाना है तो उस यज्ञ को उस महान् कार्य को विधान से करो। वेद मन्त्रों को जानो और उनको जानकर उनके अनुकूल वेदों का लक्षण करो । महान् यज्ञ को रचाओ। शुभ कार्य करो। यदि यज्ञ विधान से नहीं हुआ तो वह कदापि सम्पूर्ण नहीं होगा। मुनिवरों! यह हमारा केवल नवीन मत नहीं है। यह तो उनका मत है जिन्होंने बेटा! यज्ञ को सृष्टि के प्रारम्भ में उत्पन्न किया।

अरे देखो! यह तो तुम्हारी बुद्धि में आने वाला वाक्य है कि परमात्मा ने जब सृष्टि प्रारम्भ की तो आत्मा के विरोध से की। यदि परमात्मा विधान से इस सृष्टि को न बनाता तो यह संसार इस प्रकार नहीं चल सकता था जैसा आज चल रहा है। परमात्मा ने इस सृष्टि रूपी यज्ञ को उत्पन्न किया।

आज हम मनुष्य रूपी यज्ञ को उत्पन्न करें। आज हम भौतिक यज्ञ करें। देवताओं को सुगन्धित हव्य पहुँचायें। देवताओं को पौष्टिक पदार्थ प्रदान करें। यह हमारा कर्त्तव्य है। आज हम विशेष यज्ञ के ऊपर ही प्रकाश दे रहे हैं। हमारा वेद पाठ यह ही कह रहा है कि यज्ञ को पूर्ण करो और पूर्ण विधान से करो। धर्म से करो, अधर्म से मत करो। दुर्भावना से न करो।

देखो! जिस पद के तुम अधिकारी हो या तुम्हें चुना गया है वह चाहे तुम्हारे लिए हानिकारक है परन्तु तुम्हारा कर्त्तव्य है कि उसका पूर्ण रूपेण पालन करो, उनको लाभ हानि न पहुँचाओ। यदि लाभ हानि पहुँचाओगे तो तुम्हें कोई लाभ प्राप्त न होगा।

(महानन्द) धन्य हो भगवन!

तो मुनिवरों! अभी अभी हम व्याख्यान दे रहे थे कि मानव को कार्य करने से पूर्व उसका महान् विधान बना लेना चाहिए जैसा राजा रावण ने बनाया।

चाहे आपत्ति आए चाहे जीवन समाप्त हो जाए परन्तु उसका शाकल्य पूर्ण बनाओ। जिस पद के अधिकारी हो उसे पूर्ण करो, ऊँचे कर्त्तव्य करो। जीवन की योजना को ऊँचा बनाओ। शरीर रूपी यज्ञ को भी जानते रहो, शरीर रूपी यज्ञ में जो महान् यज्ञमान यह आत्मा है जो आत्मा को प्रेरणा दे रहा है वह संसार रूपी यज्ञ को प्रेरणा दे रहा है। और वह संसार रूपी यज्ञ को उत्पन्न करने वाला है, उसका यज्ञमान बना बैठा हुआ है आत्मा। आज आत्मा को जानो, आत्मा को पहचानो। परन्तु आत्मा तभी जानी जाएगी जब तुम शुद्ध रूप से यज्ञ रचाओगे। ऊँचे कर्म करोगे तभी तुम्हारी आत्मा बलवान होगी। जैसे राजा राम ने शुभ कर्म किए जिससे उनकी आत्मा बलवान हो गई और रावण को विजय कर लिया।

यज्ञ ही हमारा जीवन है

मुनिवरों! मैंने सुना है और प्रभु की अनुपम कृपा से देखा भी है जब महाराजा शिव और पार्वती एक स्थान में विराजमान हो करके प्रभु का चिन्तन किया करते थे कि हमारा जीवन हिमालय के तुल्य स्थिर हो। हमारा जीवन कैलाश के तुल्य हो। कैलाश वह पदार्थ है कि शरद वायु आती है हिम गिरा जाती है और ग्रीष्म में सूर्य तपायमान करता है। परन्तु वह महान् सबको सहन करता रहता है। इसी प्रकार हमारा जीवन भी नाना समस्याओं को सहन करने वाला हो। हमारा जीवन एक विचित्र और यज्ञमय हो। देवी! आज हम राजा हैं, हमें राष्ट्र को कैलाश बनाना है। आज हम उन कर्मों को करने नहीं आए जिससे हे देवी! हमारी राष्ट्रीयता समाप्त हो जाए। जिससे हमारा जो कैलाश है वह हमें अपनी गोद में धारण न कर सके।

मुनिवरों! वह कैलाश कौन है? कैलाशपति कौन है?

कैलाश राष्ट्र है। वह राष्ट्र कैलाश है जिस राष्ट्र में सदाचार की लहरें हों। जहाँ गंगा की पवित्र धारा हो। वह कौन-सी पवित्रता है? वह है सुषुम्ना नाड़ी की जागृति। हम इंगला, पिंगला और सुषुम्ना नाम की नाड़ियों को जागृत करने वाले हों। देखो देवी! उसको कैलाश कहा जाता है। प्रजा कैलाश है और कैलाश का पति शिव है। हमारे शरीर में भी यह इन्द्रियाँ कैलाश हैं, इनका पति यह आत्मा है। यह इन्द्रियों को प्रेरित करने वाला मनिराम भी बड़ा

विलक्षण है। यह मानव को कहीं का कहीं ले जाता है। आज हमें तो पवित्र और सदाचारी बन करके चलना है।

कल मेरे प्यारे महानन्द जी ने यज्ञोपवितम के सम्बन्ध में एक प्रश्न किया। वास्तव में तो मैंने आज से पूर्वकाल में यज्ञोपवित के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा है, आज भी कुछ धारा देता चला जाऊँ। मुनिवरों! यज्ञशाला में जाने का वह अधिकारी है जिसके द्वारा यज्ञोपवित हो। यज्ञोपवित वह पदार्थ है जो हमें परमात्मा के मार्ग में ले जाने के लिए प्रेरित करता है। जिसके धारण करने से परमात्मा का ज्ञान जाना जा सकता है। मेरे प्यारे महानन्द जी तो यह कहेंगे कि एक सूत्र के धारण करने से संसार का ज्ञान-विज्ञान कैसे जाना जाएगा। मुनिवरों! यह एक पवित्र धागा है, इसे विचारना है। इसके विज्ञान को जानना है। एक मूल धागा है परन्तु उससे नाना प्रकार के वस्त्र बन जाते हैं। इसी प्रकार यह धागा है **'यज्ञोपवितम्'** जो परम पवित्र है। यह आर्यों का सबसे प्रथम प्रतीक है और उस परमपिता परमात्मा ने दिया है। जब हम माता के गर्भ-स्थल में आते हैं वहाँ भी परमात्मा हमें यज्ञोपवित देता है। कैसे देता है?

मुनिवरों! जब हम माता के गर्भ में होते हैं तब एक नाड़ी उसी प्रकार की होती है जैसे यज्ञोपवित धारण किया जाता है। जब परमात्मा ने माता के गर्भ में बालक को यह प्रतीक दिया है तो हमें यह प्रतीक बाहर भी धारण करना चाहिए। मुनिवरों! देखो उस नाड़ी का सम्बन्ध हमारी आत्मा से होता है, हमारे जीवन से होता है। इसी प्रकार इस यज्ञोपवित का सम्बन्ध आत्मा से होता हुआ उस परमपिता परमात्मा से होता है जो हमारा कल्याण करता है। हमारे कल्याण के लिए विधान बना रहा है और संसार को ऊँचा बनाता चला जा रहा है और बनाएगा।

मुनिवरों! **''यज्ञोपवितम् परम् पवित्रम्।''** आज हर मनुष्य का परम पवित्र बनना उसका कर्त्तव्य है। जब तक हम सब अपने परम पवित्र यज्ञोपवित को धारण करके अपने विचारों को यदि पवित्र नहीं बना सकते तो हमारा जीवन किसी प्रकार भी यज्ञमय न होगा। आज हमें यज्ञ वेदी पर आ जाना है। यज्ञवेदी वह पदार्थ है जहाँ यज्ञोपवित होता है। वेदी हमारे यहाँ आत्मा को भी कहते हैं और वेदी यज्ञशाला को भी कहते हैं।

मुनिवरों! यह आत्मा कैसे वेदी है? जब यज्ञोपवित को धारण करके हम चलते हैं, अपने विचारों को परम पवित्र बनाते हैं तो हमारे सङ्कल्पों का, हमारी बुद्धि का, सबके विचार आत्मा के द्वारा जाते हैं और अन्तःकरण रूपी थैली में विराजमान हो जाते हैं। यह है आत्मा रूपी वेदी।

यज्ञशाला को भी वेदी कहते हैं क्योंकि जब परम पवित्र यज्ञोपवित को धारण कर ब्रह्मा ऋत्वज के द्वारा जाते हैं। उस समय हमारे जो परम पवित्र विचार हैं, जो सङ्कल्प है, वह सामग्री के द्वारा ओत-प्रोत हो करके देवताओं तक पहुँचेंगे और देवता हमारे उन विचारों को हमें देंगे वह हमारे सूक्ष्म से परम पवित्र विचारों को कई गुना पवित्र बना करके संसार को देंगे। संसार का उन विचारों से कल्याण होगा। तो हे मेरे प्यारे ऋषि मण्डल! हे मेरे भद्र मण्डल! हे मेरे विद्वत मण्डल! तू विद्वत मण्डल है। तू प्रकाश का मण्डल है। आज तू संसार में प्रकाशवान बन। ऐसा प्रकाशवान बन जैसा विद्युत प्रकाशवान है। विद्युत तेरे एक-एक कण में है, तू इसको सींच और वाणी में धारण कर। उस विद्युत को तू आत्मा में धारण कर और उसका प्रकाश कर। तेरे प्रकाश में संसार का कल्याण होगा। हे विद्युत मण्डल! तू कल्याण करने वाला है। जिस प्रकार वैज्ञानिक जलों से वायु से विद्युत को सींचते हैं, इसी प्रकार तू भी विद्युत को सींचने वाला बन। प्रत्येक इन्द्रियों में जब तुझे उसका प्रकाश प्रतीत होने लगेगा तो संसार में तेरा प्रकाश होगा। तू वास्तव में विद्युत है।

मैं यज्ञोपवित के सम्बन्ध में उच्चारण कर रहा था कि यज्ञोपवित तू परम पवित्र है। परमात्मा ने यह दिया है। परमात्मा ने क्यों दिया है? जब वेद ईश्वरीय ज्ञान कहा जाता है तो परमात्मा ने वेदों में यज्ञोपवित का मन्त्र क्यों दिया जिससे मनुष्य धारण करता है? हमारे युग के आचार्यों ने इस सम्बन्ध में कहा है कि परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में इस यज्ञोपवित को इस लिए धारण कराया है कि जिससे हे आत्मा तू मुझे शान्त न कर दे और तेरा कल्याण न हो सके। जैसे मुनिवरों! उस परमपिता परमात्मा ने बालक के द्वारा एक क्षुधा का प्रतीक बनाया है और क्षुधा के कारण वह बालक माता को तीन काल में भी शान्त नहीं कर सकता। इसी प्रकार परम पवित्र यज्ञोपवित को धारण करने वाला परमात्मा को त्रिकाल में भी शान्त नहीं करता और उस प्रभु का गुण-गान गाता ही रहता है। तो मुनिवरों! आज हमें उस प्रभु का

गुण-गान गाना है और यज्ञोपवित को धारण करना है जिससे हम ऊँचे बन जाते हैं, प्रकृति को त्यागते हैं और आत्मा को उस परमात्मा की गोद में ले जा सकते हैं इस विज्ञान से। हमारे द्वारा यह विज्ञान होना चाहिए।

मेरे प्यारे महानन्द जी ने एक समय मुझसे कहा था कि पूर्व का ऋषि मण्डल कुछ नहीं जानता था। वह वनों में रहते थे, उन्हें व्यवहार का कोई ज्ञान न था। परन्तु मैंने यह वाक्य कई समय कहा है कि यदि बेटा! वह व्यवहार का ज्ञान करते तो वह संसार में ऋषि नहीं कहला सकते थे। उन्हें व्यवहार का ज्ञान था परन्तु ऐसे नहीं जैसे संसार के रहने वालों को होता है। मुझे त्रेता काल की वार्ता कंठ में आ गई है। जिस समय महाराजा शृंगी ऋषि को कजली वनों से अयोध्या में पुत्रेष्टि यज्ञ के लिए लाया गया तो उस समय वह **188 वर्ष** का ब्रह्मचारी था। परन्तु उसने सबके चरणों को स्पर्श किया, चाहे माता थी, चाहे राजा था, चाहे सेवक था और उच्चारण किया था कि यह तो बड़ा ही सुन्दर देवलोक है। जहाँ ऐसे-ऐसे ऊँचे विचार वाले हों वह परमात्मा को तो तीन काल में भी शान्त नहीं कर सकते। वह परमात्मा के गुण-गान गा कर बारम्बार परम पवित्र बना करते हैं। आज हमें वह विचार बनाने हैं। उस नम्रता को लाना है संसार में जिसको धारण करने से मनुष्य संसार से पार हो जाता है।

महानन्द तो क्या गुरुदेव! राजा को भी ऐसा होना चाहिए जैसा आप उच्चारण कर रहे हैं?

बेटा! राजा को शान्ति व नम्रता धारण करनी चाहिए। एक समय की वार्ता है कि महाराजा कुबेर ने अपने राज्यपुरोहित से पूछा कि महाराज, मुझे कौन-सी मानवता व शान्ति को अपनाना है तो उस समय पुरोहित ने कहा था कि अरे! तुम्हें उस मानवता और शान्ति को अपनाना है कि यदि तुम्हारे राष्ट्र पर कोई आक्रमण करे तो उसे शान्ति कहकर शान्त करो परन्तु यह देखना है कि कौन-सी शान्ति होनी चाहिए। उसे भुजाओं की शान्ति नहीं चाहिए, उसे उसके चरणों में स्पर्श होने की शान्ति नहीं चाहिए। उसे तो वह शान्ति चाहिए जिससे उसका अभिमान शान्त हो जाए। वह शान्ति का शस्त्र कौन-सा है जिससे अभिमान चूर-चूर हो सकता है। वह है अपना कुठार जिसको ले करके जैसा समय देखो वैसा बर्ताव करो। तुम शत्रु पर विजय पा सकते हो। हमारा

वेद यह नहीं कहता कि तुम दूसरों के आधीन होकर विराजमान हो जाओ। हमारे वेद का आदेश तो जैसा महाराजा शिव माता पार्वती से कहा करते थे कि हे देवी! यदि हमारे हिमालय पर हमारे कैलाश पर कोई आक्रमण कर दे तो क्या करना चाहिए। उस समय माता पार्वती कहा करती थीं, ''प्रभु, अपने उन महान् वैज्ञानिक शस्त्रों को धारण करना है, जिन शस्त्रों से इस कैलाश की रक्षा हो सके।''

हे मेरे ऋषि मण्डल! मैं वार्ता तो जिज्ञासा की प्रगट कर रहा था परन्तु राष्ट्र के वाक्य उच्चारण करने लगा। आज मेरा यह वाक्य नहीं था। मैं नम्रता का आदेश उच्चारण करने जा रहा था। तो मुनिवरों! सदाचार के सम्बन्ध में एक ही वाक्य कहा है कि आज मानव को परम पवित्र यज्ञोपवित को धारण करना है। मैं तो सब ही से प्रार्थना करता हूँ कि हे मेरे प्यारे भद्र मण्डल! तू अपने इस परम पवित्र विचार को राष्ट्र से घोषित करा कि प्रत्येक माता, प्रत्येक पिता अपने बालक को परम पवित्र यज्ञोपवित को धारण कराने वाला हो। उसके विचारों में आचार्यों की प्रेरणा हो। वह आचार्य कौन से हों? वह आचार्य पवित्र हो, ब्रह्मचारी हो, उसके विचार ऐसे ऊँचे हों कि वह उस बालक को अपने उदर में धारण करने वाला हो।

मेरे प्यारे महानन्द जी कहेंगे कि आचार्य बालक को अपने गर्भ में कैसे धारण कर सकता है?

मुनिवरों! वह धारण कर सकता है। देखो जब शिष्य यज्ञोपवित को धारण करने के पश्चात् गुरू के द्वारा जाता है तो गुरू उसे गायत्री का उपदेश देता है और कहता है कि गायत्री माता है और जितने तेरे इन्द्रियों के विषय हैं इन्हें तू मुझे दे दे और मेरा जो वाक्य है, मेरा जो आहार है उसे पान कर। हे पुत्र! तू आज माता के गर्भ से आया है। पिता के गृह से आया है अब मैं तेरी माता भी हूँ और पिता भी हूँ। तू मुझे अपने अवगुण दे, अपनी चंचलता को दे, मैं अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से उन्हें समाप्त करूँगा और वह उपदेश दूँगा जैसे माता गर्भस्थल में वह ऊँचा आदेश देती है कि तुम यहाँ सदाचारी व ऋषि बन जाते हो। आज तू अपनी सब इन्द्रियों के विषयों को मुझे दे, तू केवल एक रूप को धारण कर और वह है प्रकाश। तो मुनिवरों! जहाँ ऐसी शिक्षा दी

जाती हो, जहाँ उस प्यारे पुत्र को, ब्रह्मचारी को केवल एक वेद की शिक्षा दी जाती हो, जिसे विद्या और अपनी संस्कृति से प्रेम हो और कोई ज्ञान न हो तो जानो वह ब्रह्मचारी आचार्य के गर्भ में है। वहाँ उसका पालन-पाषण उसी प्रकार हो रहा है जैसे माता के गर्भ में बालक के शरीर का पालन-पाषण होता है। आचार्य के गर्भस्थल में जाने के पश्चात् जहाँ माता के गर्भ में शरीर बनता है, वहाँ यहाँ बालक का जीवन बनता है। **आज हमें ऋषि-मुनियों की प्रणाली को धारण करना है।** आज हमें संसार को ऊँचा बनाना है। हमें शिव का पुजारी बनना है। हमें लिंग का पुजारी बनना है।

मेरे प्यारे महानन्द जी कहेंगे कि अब तो आप भी पाषाण लिंग की पूजा करने लगे। परन्तु मैंने इस लिंग की व्याख्या पूर्व के व्याख्यानों में की है। आज भी मैं कुछ संक्षेप से उस लिंग की व्याख्या करता चला जाऊँ। लिंग नाम है ज्ञान का। आज संसार में हमें ज्ञान को धारण करके चलना है। हमारा द्रव्य भी लिंग है। यदि हमारे द्वारा द्रव्य हो तो वह भी यज्ञमय हो। हम द्रव्य का दुरुपयोग करने लगते हैं तो वह ही हमारा विनाश करा देता है। यदि उस लिंग का सदुपयोग करते हैं तो वह ही हमारा जीवन यज्ञमय बना देता है। आज हमें जीवन को ऊँचा बनाना है।

मुनिवरों! जैसे उपस्थ इन्द्रियों पर शासन करने वाला महान् ब्रह्मचारी बन जाता है। इसी प्रकार आज हमें इस परम पवित्र को धारण करने वाला ब्रह्मचारी बनना है। उदार और पवित्र बनना है। उदारता और ब्रह्मचर्य से वीरता व तेज आता है। ऋषियों की प्रणाली कितनी ऊँची है जिससे हमारा कल्याण होता है। ऋषियों की प्रेरणा पा करके ही हमारा जीवन पवित्र बनाता है।

एक समय मैंने अपने गुरुदेव से निर्णय कराया कि भगवन! हम अपना जीवन यज्ञमय बनाना चाहते हैं परन्तु यह यज्ञ है क्या? उस समय मेरे पूज्य गुरुदेव ने कहा कि यज्ञ वह पदार्थ है जो हमें स्वर्ग में पहुँचाता है। मैंने अपने पूज्य-पाद गुरुदेव से कहा कि वह स्वर्ग क्या होता है? तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा कि स्वर्ग वह होता है जहाँ कोई कष्ट नहीं होता है! तब मैंने कहा कि यदि स्वर्ग में कोई कष्ट नहीं होता तो मुझे वह स्वर्ग नहीं चाहिए। जिस लोक

में जाने से मनुष्य का मान ही मान होता है वह मान मुझे नहीं चाहिए। मुझे तो वह संसार चाहिए जिसमें मान भी हो और अपमान भी हो। मान और अपमान दोनों से मानव का जीवन पवित्र बनता है। मेरे गुरुदेव ने पूछा भाई कैसे बनता है? तो मैंने गुरुदेव से कहा कि मैंने तो अपने मन का एक वाक्य मांगा है! मुझे तो निर्णय कराओ कैसे होता है। **तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने योग मुद्रा में जाकर बहुत सुन्दर उपदेश दिया** और कहा कि वास्तव में हम या तो परमात्मा के गर्भ में रहें और यदि स्वर्ग में जाकर रहें तो उस लोक को चाहते हैं जहाँ मान और अपमान दोनों हों। क्योंकि जब मनुष्य का मान ही मान होता रहता है तो वह मान ही मान में इतना अभिमानी बन जाता है कि उसकी मानवता समाप्त हो जाती है। परन्तु जहाँ मान भी होता है और एक स्थान में अपमान भी होता है तो उस समय उसे विचार आता है कि तुझे संसार में स्थिर रहना है। तुझे विचारवान रहना है। तेरे शत्रु भी हैं, मित्र भी हैं। आज तुझे वह बनना है कि अपने शत्रु को भी अपना मित्र बनाना है। हे मेरे प्यारे ऋषि मंडल! हमें शत्रुओं को भी अपना मित्र बनाना है कि जिससे हमारा कल्याण हो। जो मित्र शत्रु बन करके मित्र बना वह हमारा मान करने वाला है। वह हो सकता है किसी काल में हमारा मित्र न रहे। परन्तु जो शत्रु बन करके मित्र बनता है वह सदैव मित्र बन करके रहेगा। यह आज हमारे हृदय का एक वाक्य है। तो मेरे गुरुदेव ने मुझे बहुत कुछ शिक्षायें दीं और मैं उन शिक्षाओं से इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मानव को परमात्मा के गुणगान गा करके संसार में स्थिर रहना है। जैसे कैलाश पर्वत पर नाना आपत्तियाँ आती हैं परन्तु सहन करता रहता है। इसी प्रकार आज हमें परम पवित्र यज्ञोपवित को धारण करके शान्त और विचारवान बनना है। हमें संसार में शत्रुता को नहीं चुनना है। हमें मित्रता को लेना है।

तो बेटा! आज का हमारा उपदेश क्या कह रहा था। मैं प्रभु से कह रहा था कि हे प्रभु! मैंने सुना है तुमने अगस्त्य मुनि को संसार से पार किया है। प्रभु, मैं किंचित बुद्धि वाला एक महात्रुटियों वाला तेरी शरण में आना चाहता हूँ और चाहता हूँ कि मेरा यह जीवन यज्ञमय हो। मेरा द्रव्य हो वह भी यज्ञमय हो। मेरे शरीर का एक-एक कण यज्ञ में प्रेरित हो। मैं एक सूक्ष्म से बन्धन में रहने वाला हूँ। प्रभु! मैं तुम्हें तब ही जानूँगा जब तुम मुझे इस बन्धन से दूर

करोगे। प्रभु! मुझे पार करो मैं संसार सागर से पार होना चाहता हूँ यज्ञ के द्वारा। वेद रूपी प्रकाश के द्वारा।

मैं पुनः-पुनः याचना करता रहूँगा कि जिनको आज तुम अपना शत्रु बना रह हो वह तुम्हारे शत्रु नहीं। एक समय में तुम्हारे मित्र भी बनेंगे। आज जिनको तुम आहार करते जा रहे हो एक समय वह आएगा कि वह तुम्हें आहार करेंगे। यदि मैं ज्ञान की गोद में जाऊँगा तो ज्ञान मुझे अपनाएगा। यदि मैं पाप करने लगूँगा तो पाप मेरे जीवन को समाप्त कर देगा। यदि मैं हिंसा करने लगूंगा तो एक समय वह आएगा कि जिनकी आज मैं हिंसा कर रहा हूँ वह मेरी भी बलि दे सकते हैं। आज यदि मैं किसी प्राणी की रक्षा करूँगा तो एक समय आएगा कि वह प्राणी मेरी रक्षा करेगा। तो हे मेरे प्यारे ऋषि मंडल! हे मेरे मानव मंडल! हे मेरे भ्रातृ मंडल! मैं पुनः से यह निवेदन कर रहा हूँ, वाणी के वर्णन से नहीं, मैं अपनी आन्तरिक आत्मा से यह वाक्य कह रहा हूँ कि यदि तुम्हें संसार में परम पवित्र बनना है तो तुम संसार में किसी की हिंसा न करो। तुम अपने जीवन को यज्ञमय बना लो। परम पवित्र को धारण कर तुम परम पवित्र बनो।

आज तुम देखो दूसरे जीवों का भक्षण न करो। आज यदि तुम जीवन चाहते हो, राष्ट्र की एकता चाहते हो, सदाचार चाहते हो तो तुम प्राणियों की रक्षा करो। बल से करो, वाणी से करो, हस्त से करो परन्तु रक्षा करो। यह जो तुम्हें शरीर दिया है यह दूसरों की रक्षा करने के लिए दिया है। यह दूसरों का वध करने के लिए नहीं। यह जो हमारे भुज हैं, हमारे अंग-अंग की रक्षा करते हैं। दूसरे प्राणियों की रक्षा करते हैं। यह हमारे द्वारा प्रतीक हैं और शिक्षा देते हैं कि प्रभु ने यह दूसरों की रक्षा करने के लिए दिए हैं। आज संसार में हमें अपने जीवन को ऊँचा, महान् व विलक्षण परम पवित्र बनाना है। उन भुजों से, वाणी से, उपस्थ इन्द्रियों से और त्वचा से दूसरों की रक्षा करनी है। हमें दूसरों को नष्ट नहीं करना है। हमें तो हमारे द्वारा जो काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह शत्रु हैं उनको नष्ट करना है। हम इनका वध करेंगे तो हमारा जीवन महान् बन जाएगा। आज हमें अहिंसा परमो धर्म का पालन करके ज्ञान के और वेद के प्रकाश में जाना है। यज्ञमय अपने जीवन को बनाना है। तो अब यह हमारा आदेश समाप्त होने जा रहा है।

॥ ओ३म् ॥

द्यौ लोक का घृत

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुण गान गाते चले जा रहे थे। हमारे यहाँ नित्य प्रति कुछ उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान माना जाता है। यह जो सर्वत्र जगत है यह उस परम पिता परमात्मा का एक विज्ञान भवन है क्योंकि परमात्मा का जो रचाया हुआ एक महान् विज्ञान है वह नित्य प्रति अपना कार्य करता चला जा रहा है।

आज का हमारा वेद का ऋषि क्या आज्ञा करता चला जा रहा था? मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा वेद मन्त्र बहुत सूक्ष्म वार्ता प्रकट कर रहा था। कल यह उच्चारण किया जा रहा था कि अन्तरिक्ष का घृत क्या माना जाता है? इसके ऊपर हमारा विचार विनिमय चल रहा था, नाना ऋषि-मुनियों का विचार अथवा उनका अनुसन्धान प्रायः होता रहता था और नाना टिप्पणियाँ भी दी हैं। रहा यह वाक्य कि उनके विचारों में, हमारे और भी नाना ऋषियों के विचारों में भिन्नता हो सकती है। उनके शब्दों की जो रचना और वाक्यों का जो सुन्दर विश्लेषण है वह हमारे लिए प्रायः अनुकूल न हो परन्तु उनका विचार एक महान् और सार्वभौम हो जाता है। ऋषि कहते ही उसको हैं जो अपने जीवन का सम्बन्ध द्वितीय बाहरीय जगत और अन्तरिक्ष जगत का समन्वय करने वाला होता है। दोनों की जो धारा है उनको एक संगम में लाने वाला होता है। संगम का अभिप्राय क्या होता है?

देखो हमारे यहाँ मन पर ऋषियों ने बल दिया है कि मन को पवित्र बनाया जाए। मन संसार में उन वनस्पतियों का सूक्ष्म रस कहलाता है जिसकी प्रतिष्ठा द्यौ लोक में रमण करने वाली होती है। यह जो हमारा मन है यह नाना प्रकार की सुन्दर रचनायें रचने वाला है। क्यों रचता है? इस मन की धारा क्या है? मन की जो उपलब्धि मानी जाती है और इसकी जो धारा है वह जो नाना

प्रकार की वनस्पतियाँ होती हैं, नाना जो औषधियाँ होती हैं, उनका रस परमाणु बन करके अन्तरिक्ष में रमण कर जाते हैं, उसमें उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है उसी को हमारे यहाँ सार्वभौम मन कहा जाता है क्योंकि मन प्राण का और नाना प्रकार की वनस्पतियों का उत्पादन नहीं होगा। जिस प्रकार वसुन्धरा पृथ्वी के गर्भस्थल में नाना प्रकार की वनस्पतियों का जन्म होता है परन्तु वह इसीलिए होता है क्योंकि उसमें एक महानता होती है, उसमें सार्वभौमता होती है और विभाजन करने की इसमें एक महान् शक्ति होती है क्योंकि प्रकृति के परमाणुओं का मन विभाजन करता रहता है इसलिए हमारे यहाँ इस मन को वनस्पतियों का घृत कहा जाता है।

हमारे समीप एक वाक्य आता रहता है **'निदानम पेमकृति रूदों भागाः'** जिस प्रकार पशु जो नाना प्रकार की वनस्पतियों को ग्रहण करता है, जिस यन्त्र में वह मंथन किया जाता है यदि आज हम बाहरीय औषधियों के द्वारा उस घृत को लाना चाहें तो वह किस प्रकार ला सकते हैं। यह हमारे यहाँ अनुसन्धान का विषय रह जाता है। इसमें महर्षि वायु मुनि महाराज, दालभ्य और महर्षि सौममुनि महाराज इत्यादि का जो विचार है उसे मैं तुम्हें प्रकट करा रहा हूँ। आज जब हम नाना प्रकार की औषधियों को एकत्रित करते हैं और एकत्रित करके अष्ट-कोण यज्ञशाला बनाते हैं और अष्टकोण यज्ञशाला बना करके यज्ञशाला का जो ऊपरी विभाग होता है उसमें देखो हरित, स्वेत और पीत वर्ण के उसमें कीर्ति या अस्वात **अप-ग्रीह** होते हैं। वह जो वनस्पतियाँ हम यज्ञशाला में परिणत करते हैं, तपाते हैं, तपाने के पश्चात् उनकी धारा बनाकर के यज्ञशाला में जब उनका अपरात निदान होता है तो उसी निदान के कारण, महानता के कारण हमारे यहाँ ऐसा माना जाता है कि जिसमें जीवन की एक महान् धारा पवित्रता में परिणत की जाती है क्योंकि हमारे यहाँ यज्ञशाला में एक महानता का सदैव दिग्दर्शन प्रायः होता रहता है जिसके ऊपर हमारा केवल महान् विचार के साथ में हमारी मौलिक धारा होती है। उस यज्ञशाला में उस याज्ञिक पुरुष की एक महान् धारा में परिणत होने वाला एक विचार होता है। जब मानव यज्ञशाला में परिणत होता है तो उसकी महान् धारा एक पवित्रता में परिणत हो जाती है।

आओ मेरे प्यारे ऋषिवर! आज का हमारा आचार्य क्या कह रहा है? हमें विचारना क्या है? हमें यज्ञ के घृत को विचारना है। जिसके ऊपर मानव को सदैव विचार विनिमय करना है। आज मैं ऋषि मुनियों का विचार देना चाहता हूँ और वह क्या कि हमें मन और प्राण की सूक्ष्मता को जानना चाहिए। वह द्यौ लोक में जो नाना प्रकार की वनस्पतियों का रस है यज्ञ के द्वारा हम उसका पात बना सकते हैं और पात बना करके सूर्य की जो नाना किरणें हैं उनको हम अपने में ला सकते हैं। क्योंकि किरणों के द्वारा ही पशु के उस शरीर में प्रायः उसका निदान होता है, महानता में उसकी धारा होती है जिसके ऊपर मानव को एक विचार विनिमय करना होता है।

हमारे यहाँ **यज्ञ भूतानां घृतं रूद्रस्य भागाः** आचार्य कहता है कि यज्ञ शाला में याजिक पुरुष जब विराजमान होता है तो सूर्य की किरणों का किस प्रकार निदान किया जाता है? उसको हम अपने में किस प्रकार धारण कर सकते हैं इसके ऊपर हमें विचार विनिमय करना है। तो वहाँ वेद का ऋषि कहता है, महर्षि वायु ने कहा है, महर्षि भारद्वाज ने एक वाक्य में कहा है **'सम भव प्रभे अकृतानि रुद्रस्य भागाः'** कि नाना प्रकार की सूर्य की किरणों को अपनी श्वांसों की गतियों में लाना चाहते हैं क्योंकि सूर्य की किरणों से नाना प्रकार की किरणों का जन्म होता है, उन किरणों में एक महानता की धारा होती है उन्हीं को लाने के लिए हम सदैव तत्पर रहते हैं जिससे हमारा विचार आचार्यों की दृष्टि में महान् माना गया है क्योंकि उसको हम अपने मस्तिष्क की यज्ञशाला में लाना चाहते हैं तो एक महान् यौगिक विषय बन जाता है। हमारे यहाँ योगाचार्यों ने कहा है **'ब्रह्म योगात प्रभा अस्ति सुप्रजाः'** मानो जो ब्रह्म का निदान करने वाला होता है, ब्रह्म विद्या का निदान करना जानता है। क्योंकि ब्रह्म की विद्या का निदान मन और प्राण के साथ ही होता है। यदि मन और प्राण दोनों को निदान में नहीं ला सकोगे तो जीवन में महानता का कदापि भी दिग्दर्शन नहीं हो सकेगा।

आज प्रत्येक मानव को संसार में यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ की प्रतिभा क्या कह रही है कि आज हमें नाना प्रकार का अनुसन्धान करना है क्योंकि यह जो जगत है यह परमात्मा का एक भव्य भवन है, यज्ञशाला, यही तो ब्रह्म विद्या विचारने का एक **'यज्ञ प्रभे कृतव्यों'** इसको ब्रह्म भवन कहा जाता है। इसमें

जो मानव अनुसन्धान कर लेता है, जितना अपने जीवन का निदान कर लेता है, जितना अपने हृदय को स्वच्छ बना लेता है, जितनी मन की धारा को ऊँचा बना लेता है उतनी ही उसकी मन की धारा पवित्र बन करके द्यौ लोकों में उनकी प्रतिष्ठा हो जाती है। ऐसा हमारे यहाँ वेद का ऋषि कहता है **'यज्ञ भूतानां प्रभाकृति रूद्राः सन्ति लोके'** आचार्य कहते हैं, महर्षि भारद्वाज ने यह कहा है कि यजमान के हृदय की जितनी शुद्धता होगी, जितनी महानता उसके द्वारा होगी, उतनी ही प्रत्येक आहुति (उसका उच्चारण किया हुआ जो शब्द है उसी को आहुति कहा जाता है) अग्नि का स्वरूप माना गया है। हमारे यहाँ कल के वाक्यों में उच्चारण किया जा रहा था कि **ब्रह्म वृहाम् ब्रह लोकः?** मानो अग्नि को हमारे यहाँ अध्वर्यु कहा जाता है। उद्गाता का अभिप्राय केवल अग्नि और वायु दोनों की पुट हुआ करती है उस समय वायु उद्गाता कहलाता है और अग्नि अध्वर्यु कहलाता है। अध्वर्यु का क्या अभिप्राय है? वह मानो वायु की सहकारिता से ही, वायु के मिलाप से ही अध्वर्यु कहलाता है और वायु अग्नि के साथ में मिश्रण होने से ही उसको हमारे यहाँ उद्गाता कहा जाता है क्योंकि वायु ही तो सामगान गाती है। उद्गाता ही तो यज्ञशाला में उद्गीत गाता है। यज्ञशाला में परिणत होता हुआ महानता को प्राप्त होता रहता है।

हमारे यहाँ अग्नि को ही **'अग्नि प्रभा कृत्रं रुद्रास्यभागा असवतो लोकं मम वाचं प्राणी'** आत्मा को हमारे यहाँ यजमान कहा गया है क्योंकि आत्मा ही इसका कृत कहलाया गया है। आत्मा के साथ ही **'यजंभूतस्य प्रभा'** क्योंकि संसार में आत्मा के कारण मन प्रकृति का जितना परमाणुवाद है, जितना अणुवाद है वह सब आत्मा के आश्रित होता हुआ इस शरीर में गति कर रहा है। यह मानवीय गति इसी के आश्रित हो करके रमण किया करती है।

ब्रह्म की चेतना संसार में अपना-अपना कार्य कर रही है। ब्रह्म विद्या ही मानव को ऊँचा बनाती है, राष्ट्र को ऊँचा बनाती है और राष्ट्र में धर्म को ला देती है। इसीलिए आज हमें ब्रह्म विद्या की आवश्यकता है। जब प्रत्येक मानव धर्मनिष्ठ और ब्रह्मनिष्ठ होता है उसी काल में उसकी विचारधारा में एक महानता का दिग्दर्शन, महानता उसके हृदय में प्रतिष्ठित हो जाती है जिससे वह महान् कहलाता है। मानव की जो वाणी होती है उसका सम्बन्ध अग्नि से

होता है, इसलिए हमारे यहाँ किसी-किसी ऋषि ने अग्नि को भी उद्गाता कहा है, वायु को अध्वर्यु कहा परन्तु इसका विचार हम किसी काल में वेद-पाठ आएगा तो प्रकट करेंगे। आज का हमारा यह वाक्य आज्ञा नहीं दे रहा है आज तो हम प्रभु की याचना कर रहे हैं कि हे प्रभु! तू स्वयं यज्ञ है, तेरी महानता इन वेदों में परिणत हो रही है, वेद की जो अनुपम धारा है, वेद का जो प्रकाश मानव के अन्तःकरण को पवित्र बनाता है, क्योंकि वेद की जो अनुपमता है, ब्रह्म विद्या है, महानता है, उसमें उसका एक-एक शब्द पक्षपात से रहित है, उसी को तो ब्रह्मविद्या कहते हैं। क्योंकि परमात्मा रूढ़ी नहीं होता, इसी लिए वेद भी रूढ़ी (अज्ञान) नहीं है। इसीलिए वेद के अनुसार मानव को अपने जीवन को ऊँचा बनाना चाहिए। जो मानव रूढ़ियों में परिणत हो जाते हैं उनके जीवन का विनाश हो जाता है, उनका जो मानसिक सङ्कल्प होता है उसकी धाराओं में भिन्नता आ जाती है।

आज हमारा वेद-पाठ क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की उपासना करते हुए यज्ञशाला में परिणत होते हुए अपने विचारों का यज्ञ करते चले जाएं। नाना प्रकार का सङ्कल्प हो, सङ्कल्प के साथ में हमारा एक मानसिक सङ्कल्प हो, प्राण का ही उसमें निदान हो, उसके पश्चात् जब हम आहुति देते हैं वह आहुति द्यौ लोक को प्राप्त होती है, देवतागण उनको प्राप्त करते हैं और देवता जब तृप्त होते हैं तो राष्ट्रवाद को क्या समाज को पवित्र बनाते चले जाते हैं क्योंकि यह जितना जगत है यह सब परमाणुओं की ही रचना है। कल मुझे समय मिलेगा तो मैं यह उच्चारण कर सकूँगा कि द्यौ लोक का जो घृत है उसमें कितने सूक्ष्म परमाणु होते हैं और वह परमाणु जब अग्नि उद्गाता बन करके और वायु अध्वर्यु बन करके जब उसका शाकल्य उनमें प्रदान किया जाता है तो द्यौ लोक में कितनी महान् गति होती है। जितना मानव का हृदय स्वच्छ और पवित्र होता है, ममता से रहित होता है, क्रोध से रहित होता है, नाना प्रकार की विडम्बनाओं से रहित होता है उतना ही द्यौ लोक को मानव का सङ्कल्प प्राप्त होता चला जाता है।

दिनाँक : 12 फरवरी, 1971
स्थान : लाक्षागृह वरणावत, बागपत

॥ ओ३म् ॥

द्यौ लोक को समिधाएँ एवम् वृष्टि यज्ञ

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। यह भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों को पठन-पाठन किया हमारे यहाँ जो पठन पाठन का प्रायः क्रम होता है वह सदैव विचित्रता में परिणत माना गया है। आज का हमारा वेद पाठ क्या कह रहा था इसके ऊपर हमें विचार विनिमय करना है। मैं कल के अपने उस महान् विषय को लेना चाहता हूँ जो आज हमारे वेद मन्त्रों द्वारा प्रतिपादन किया जा रहा था। हमारे यहां ऋषि मुनियों के दो प्रकार के विचार माने गए हैं। कहीं-कहीं तो आचार्यों ने वायु को उद्गाता माना है और किन्हीं आचार्यों ने अग्नि को उद्गाता माना है परन्तु ऋषियों का जो एक विचार है उसका सन्निधान कर लेना चाहिए। दोनों को विचार करके उसका मिलान कर लेना चाहिए।

यहाँ वायु मुनि महाराज ने और भी नाना आचार्यों ने अपने शब्दों में कहा है कि यदि हम संसार में उज्जवल स्वरूप को लेकर के चलते हैं, महानता पर विचार विनिमय करते हैं तो हमारे यहाँ वायु और अग्नि दोनों की सहकारिता और मिलान होने पर वह एक उद्गाता की श्रेणी, उद्गाता की कृति प्रतिपदिता मानी गई है परन्तु जहाँ मैं यह विचारने लगता हूँ कि वेद का ऋषि इस सम्बन्ध में क्या कहता है तो वेद का ऋषि कहता है **'वायु उद्गाता प्रभे आकृति सुप्रजाः'** क्योंकि वायु को उद्गाता ही माना है। इसमें नाना प्रकार का भेदन माना गया है। ऋषि कहते हैं कि नाभि केन्द्र में जब एक प्रकार का प्रवाहकृत होने लगता है तो उस समय शब्द का उद्गार उत्पन्न होता है क्योंकि वाणी का जो स्वरूप है वह अग्नि माना गया है। क्योंकि व्यष्टि-समष्टि में जब हम पहुँच जाते हैं और विचरने लगते हैं तो इस शरीर में जो वाणी है और वह लोक में अग्नि मानी गई है। तो इसलिए अग्नि से उच्चारण किए हुए शब्द को ही हमारे यहाँ उद्गाता कहा जाता है। इसमें एक भिन्नता आ जाती है क्योंकि

प्राण का सन्निधान जब तक अग्नि के साथ नहीं होगा तो किसी शब्द की उत्पत्ति होना असम्भव हो जाता है जैसे हमारे इस सूक्ष्म से पिण्ड में ब्रह्मरन्द्र स्थान माना गया है जिसमें नाना सूक्ष्म वाहक नाड़ियाँ होती हैं। एक नाड़ी सूर्यकेतु नाम की होती है जिसका सम्बन्ध सूर्य से होता है। जिस समय उस नाड़ी का चक्र चलता है तो उसका निर्माण मेरे प्यारे प्रभु ने इस प्रकार किया है कि जब वह अपने स्थान से दूसरे स्थान पर केवल प्राण का संयम करने से, मन का सन्निधान करने से मन और प्राण दोनों का मिलान करने से अग्नि प्रदीप्त होती है। वह जो हमारी ब्रह्मरन्द्र वाली अग्नि जिसको हमारे यहाँ द्यौ लोक कहा जाता है जब इन दोंनों का मिलान होता है उस नाना प्रकार की ब्रह्मरन्द्र रूपी जो यज्ञवेदी है जब उसमें घृत की आहुति देता है तो अग्नि प्रदीप्त हो जाती है। कौन सी अग्नि? वह जो द्यौ लोक की अग्नि है उसका जो सूक्ष्म रूप है जब वह घृत बनकर घृत की आहुति देते हैं तो उस समय वह अग्नि प्रदीप्त हो करके वह जो सूर्यकेतु नाम की नाड़ी है उसमें एक गति उत्पन्न होती है। एक नाड़ी ऐसी है जिसका सम्बन्ध आरुणी मण्डल से होता है इसी प्रकार उसके साथ में एक नाड़ी इस प्रकार की है जिसका सम्बन्ध ध्रुव मण्डल से होता है। तो यहाँ आरूणी और ध्रुव और सूर्य इन तीनों नाड़ियों का चक्र चलता है इस अग्नि के द्वारा वह यज्ञवेदी में जो यह तीन समिधा होती है जब यह तीन समिधाएँ याज्ञिक पुरुष की जागरूक हो जाती हैं तो सूर्य मण्डल, आरूणी मण्डल और ध्रुव मण्डल का रहन-सहन, वहाँ का विचार योगी स्वतः जान लेता है।

आज मैं इन वाक्यों को गम्भीर नहीं बनाना चाहता। केवल वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय यह है कि उस अग्नि की आहुति हम कैसे दे सकेंगे जिससे इन तीनों मण्डलों को जान जाएँ। देखो वह तीन समिधा कहलाती हैं जो मानव के ब्रह्मरन्द्र में होती हैं। हे ब्रह्मचारी! हे याज्ञिक पुरुष! यदि तू यज्ञ का अधिकारी बनना चाहता है और यज्ञ के द्वारा तू दूसरे लोकों में रमण करना चाहता है और नाना प्रकार के भौतिक परमाणुवाद को जानना चाहता है तो तुझे मन और प्राण दोनों को सम्बन्धि धत करके दोनों को मन्थन करके, जो मन और प्राण को सूक्ष्म रूप देता है, वह ब्रह्मचारी जिसको हमारे यहाँ महातत्त्व कहा जाता है जिसको प्रकृति का बहुत ही सूक्ष्म स्वरूप माना

गया है जब उसकी आहुति दी जाती है। अरे! कौन देता है। महर्षि भारद्वाज जैसे ऋषि दिया करते हैं उस आहुति को, या महर्षि भृगु जैसे आचार्य दिया करते हैं, व्यास और सुखदेव जैसे मुनि दिया करते हैं जिनका जीवन एक महानता में परिणत माना गया है।

मैं इस सम्बन्ध में अधिक चर्चा प्रकट नहीं करना चाहता हूँ। मैंने तुम्हें तीन समिधाओं की विशेषता प्रकट की है। तीन समिधाएँ यह हैं और तीन समिधाएँ इनके साथ और होती हैं। उन समिधाओं में से एक तो इस पृथ्वी मण्डल की होती है, एक समिधा अन्तरिक्ष मण्डल की होती है और एक समिधा द्यौ मण्डल की होती है। यह तीन समिधा हैं जिनको स्वान, अनुतनी और कृति कहते हैं। इनकी ब्रह्मरन्द्र में जागरुकता होने के कारण तीन लोकों की वार्ता जानने वाला याज्ञिक बन जाता है। यह हमारी आध्यात्मिक समिधाओं का वर्णन होता चला जा रहा है। आध्यात्मिक वेत्ताओं ने कहा है, आदि ऋषियों ने कहा है कि हमें इनके ऊपर बहुत अनुसन्धान करना है, जिससे हमारे जीवन में महानता की एक ऐसी तरंग उत्पन्न हो जाए जिससे हमारा यज्ञ, हमारी मानवता, हमारे ब्रह्मरन्द्र में विशाल गति हो करके हम भी उन लोकों को प्राप्त होते चले जाएँ।

वाक्य उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय क्या है कि आज हम उन चार समिधाओं को और जानना चाहते हैं जिनकी हमें आहुति देनी है। वह चार समिधायें यह हैं कि चार नाड़ियाँ इस प्रकार की हैं हमारे ब्रह्मरन्ध्र में जिनको स्वाति, अभेलनी, क्रांतनी और रेनकेतु कहते हैं। जब हम इनको जान लेते हैं तो जहाँ इन नाड़ियों का मिलना होता है और मिलान करके चार आहुति बन करके एक आहुति हमें अप्रेत को प्राप्त हो जाती है, दशम को प्राप्त हो जाती है। और तीन जो समिधा हैं उनका जहाँ दसों समिधाओं का मिलान हो करके चार समिधाऐं इनके ऊपर छा जाती हैं। छा जाने के पश्चात् हृदय रूपी जो हमारी यज्ञवेदी है उसमें उन समिधाओं की आहुति लगा करके, अग्नि बन करके एक महान् गति होती है, उसमें जो संसार के नाना लोक लोकान्तर समाहित हो जाते हैं। उसमें शिव-पार्वती अपना नृत्य करने लगते हैं। माता पार्वती प्रकृति है और ब्रह्म (शिव) की आभा बन करके हृदय रूपी यज्ञ वेदी में जब नृत्य होने लगता है तो वह अग्नि प्रदीप्त हो करके मन और प्राण की जब

सूक्ष्म घृत रूपी आहुति लगती है तो उस समय योगी का हृदय इन सब लोक लोकान्तरों के जानने वाला बन जाता है और वह पुरुष ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए संसार में लोकप्रिय हो जाता है और द्यौ लोक में जो महान् विशेष आत्माएँ भ्रमण करती रहती हैं उनसे भी ऊँची स्वर्ग की आत्माओं को प्राप्त हो जाता है।

कल मैंने यह वाक्य प्रकट किया था कि हम सूर्य की किरणों को अपने में धारण करना चाहते हैं। मेरा परम्परागतों से यह विश्वास रहा है क्योंकि हमने भी अनुसन्धान किया है। यह अनुसन्धान इस प्रकार के होते हैं कि बारह-बारह वर्ष तक नाना प्रकार की वनस्पतियों को पान करने से बुद्धि में इनका दिग्दर्शन होता है। एक समय आचार्यों ने मुझे निर्णय कराया कि तुम इसके ऊपर अनुसन्धान करो। तो मुझे परमपिता परमात्मा की अनुपमा कृपा से वह सौभाग्य प्राप्त हुआ। **'यज्ञ ब्रह्मलोके प्रभा अस्ति सुप्रजा'** इस विषय पर जिससे हम सूर्य की किरणों को अपने में धारण कर सकें। उनमें कितने प्रकार के परमाणु होते हैं, वायु की गति कितनी होती है, सूर्य की किरणों की कितनी गति होती है और कितने सूक्ष्म परमाणु का आगम्य होता है। ऋषि मुनियों ने यह कहा कि आप इसके ऊपर अनुसन्धान क्यों नहीं करते। क्योंकि इससे वृष्टि होती है। वृष्टि यज्ञ वही करा सकता है, जो सूर्य की तपस्या करता हुआ सूर्य की किरणों को शक्ति के द्वारा सङ्कल्प अपने में धारण करके और उन नाना प्रकार की वनस्पतियों को जान जाए। जैसे ग्रीष्म ऋतु में सूर्य की किरणें पृथ्वी के जल को अपने में शोषण कर लेती हैं, अन्तरिक्ष में वह परमाणु विराजमान हो जाते हैं, अन्त में समुद्र का समुद्र ओत-प्रोत हो जाता है इसी प्रकार उन किरणों को जान करके सङ्कल्प बना करके और नाना प्रकार की वनस्पतियाँ जान करके जो याज्ञिक यज्ञ करता है यह भौतिक यज्ञ है। उसमें एक सेनमुक एक औषधि है, एक सेल-खण्डा होती है, शंखहुली होती है, मामकेतु होती है, स्वांगनी होती है, वातकेतु होती है, किरकल होती है, आभूषणी होती है और जापवित्र होती है, जायफल होता है, जमनकेतु होती है, आस्वानी होती है, लक्ष्मण बूटी होती है, भ्रानकेतु होती है, अशेवगनी होती है, पीपल का दाह (दाड़ी) होती है, पीपल का पञ्चाङ्ग होता है, वट वृक्ष का पञ्चाङ्ग होता है और यह देवदास का पञ्चाङ्ग होता है, मामधानियों का पञ्चाङ्ग

होता है, नाना प्रकार की औषधियाँ होती हैं उनकी गणना करने में समय लगेगा परन्तु इतना समय आज्ञा नहीं दे रहा है। मेरे महानन्द जी भी अपने वाक्य उच्चारण करने के लिए यहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। दण्डकेतु का एक पञ्चाङ्ग होता है इसी प्रकार सेलकेतु एक वृक्ष होता है जो प्रायः पर्वतों में प्राप्त होता है उसका पञ्चाङ्ग होता है। मानधाता एक वृक्ष होता है, उसका पञ्चाङ्ग होता है, गुलकेतु एक वृक्ष होता है उसका पञ्चाङ्ग होता है। इस प्रकार की औषधियाँ एकत्रित करके और जो घृत होता है और गौ घृत को भी सूर्य की किरणों में तपाया जाता है, तपाने के पश्चात् उसको अग्नि में तृप्त करके उस घृत के साथ में उस अग्नि में एक सोमरस बनाया जाता है। वह सोमरस कैसा बनाया जाता है? उसमें एक रुगणी औषध होती है और मुनि अनन्त केतु एक औषधि होती है, एक आनन्द केतु औषधि होती है इन तीनों को अग्नि में तपा करके पात बनाया जाता है। पात बना करके इसको देनकेतु कहते हैं, गन्दाशील भी कहते हैं और किसनानी भी कहते हैं, केसल होती है, कस्तूरकान होता है, आभागन होता है, इन नाना प्रकार की औषधियों से पात बनाया जाता है। उस पात में यह विशेषता होती है कि जो आहुति इन औषधियों को लेकर के जाती है। एक ऋतु का अन्न होता है, ऋतु का जो भी अन्न हो। एक ऋतु का फल होता है इन सबकी एक सामग्री बना करके यजमान भी सङ्कल्पवादी हो, श्रोतागण भी सङ्कल्पवादी हो। ब्राह्मण भी ऊँचा हो, वह उस निदान को अच्छी प्रकार जानता हो, कर्मकाण्ड भी उसका एक विशेष होता है, कर्मकाण्ड की पद्धति यह है कि उसमें पीपल, दाख, अन्नेकेतु नाना प्रकार के वृक्षों की समिधा होती है। उनको एकत्रित करके जब हम यज्ञ करते हैं तो उससे वृष्टि यज्ञ हो जाता है। तो मैंने इसका बहुत अनुसन्धान किया। मुझे बारह वर्ष तक निन्द्रा नहीं आ सकी इस अनुसन्धान में। जब यह अनुसन्धान किया, औषधियों को लाया गया बेटा! एक सेनकेतु औषध होती है, उसका पञ्चाङ्ग होता है। उसकी छाल को लिया जाए तो बड़ी स्वादिष्ट और यदि गूदे को लिया जाए तो वह रसना को बहुत प्रबल कर देता है उसमें इतनी अग्नि होती है, इतनी प्राण शक्ति होती है और उसका जो पत्ता होता है उसको घ्राण के द्वारा सूघंने से ही मानो जिह्वा का शोधन समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार उसका जो पञ्चाङ्ग होता है, उसकी पाँचों वस्तुएँ ले करके उसको सामग्री में परिणत किया जाता है। इसी प्रकार उसमें एक सूर्यघृत बनाया जाता है।

सूर्यघृत किसे कहते हैं? सूर्यघृत कहते हैं वेद का ऋषि कहता **'सन्मील अनेन अन्य आभूषणों अमृत नेमकेतु रुद्रः'** कि मानव को अपने सङ्कल्प को दृढ़ बनाना है क्योंकि वह जो सङ्कल्प है, जिस कार्य को कर रहे हो उसमें निष्ठा सङ्कल्प और यजमान चरित्रवान और संस्कारवादी होना चाहिए। जब वह यज्ञ करेगा तो उसके पश्चात् यहाँ वृष्टि यज्ञ हो जाता है।

मैं यज्ञों के सम्बन्ध में अधिक विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। आज मैं यह उच्चारण कर रहा था कि यह जो यज्ञशाला है इस यज्ञशाला में हमें आहुति देनी है और आहुति दे करके यज्ञ को पवित्र बनाना है, सुगन्धिदायक बनाना है, महान् बनाना है जिससे यह संसार ऊँचा बनता हुआ और इन यज्ञ जैसे कार्यों को ऊँचा बनाना है। जैसा महानन्द जी ने कहा है कि इसको पाखण्ड कहा जाता है तो बेटा! पाखण्ड उस काल में कहा जाता है अब मानव परमाणुवाद को केवल इस गति में न लेकर के और भौतिकवाद इतना उन्नत आप्रभे अस्ति हो जाता है और ब्राह्मण वेदपाठी रहते नहीं, ब्राह्मण अनुसन्धानवेत्ता नहीं रहते तो उनके ज्ञान का अपमान प्रायः होता रहता है क्योंकि मुझे स्मरण है कि एक समय प्राय मैं नग्न रहता था अपने काल में। वह पुरातन काल था आज तो मैं इस आपत्ति काल में कोई वाक्य प्रकट करने वाला नहीं परन्तु नग्न रहता था जब नग्न को ले जाया जाता था कजली वनों से तो इस काल में जहाँ जाते, वैज्ञानिक भी यह प्रश्न करते थे कि महाराज हमें अमुक धातु का निर्णय कराइए जिससे हम वायुयान बना लें, जिससे हम वरुणास्त्र बना लें, जिससे जलाशय अस्त्रों का निर्माण हो जाए जिसको वरुणास्त्र भी कहते हैं। सामनी यन्त्र होता है जो अग्ने अस्त्रों को शान्त करने वाला होता है। आज तो मैं इस सम्बन्ध में कोई वाक्य प्रकट करने वाला नहीं। मुझे भी इस अनुसन्धान में सौभग्य प्राप्त होता रहा है। आज मैं इन वाक्यों को उचरण करता हआ दूरी चला गया। अब मेरे प्यारे महानन्द जी एक वार्ता प्रकट करेगें जो मैं अपने प्यारे महानन्द जी से केवल एक **अमृत्तम समन्वे-अस्ति सुप्रजा।**

दिनाँक : 13 फरवरी, 1971
स्थान : लाक्षागृह वरणावत, बागपत

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. यह जो चित्त है इसमें मानव के जन्म-जन्मान्तरों के संस्कार विराजमान होते रहते हैं।
2. मानव के लाखों वर्षों के संस्कार भी कभी-न-कभी आने प्रारम्भ हो जाते हैं।
3. संस्कार उसे कहते हैं जहाँ से वस्तुओं का मिलान होता है।
4. जहाँ चित्त होता है वहीं जन्म होता हैं और जहाँ चित्त नष्ट हो जाता है वहाँ मुक्ति का वाक्य माना जाता है।
5. आत्मा वही है जो शरीर को क्रियाशील बनाता है। ज्ञान और प्रयत्न दोनों उसी के द्वार से उत्पन्न होते हैं।
6. देवता वह होता है जो तपस्वी होता है।
7. यदि मानव के जीवन में अनुसन्धान नहीं होगा तो उसका जीवन न होने के तुल्य माना जाता है।
8. राष्ट्र और मानव उस काल में नत-मस्तक नहीं होता जब तक उसके द्वारा तपस्या का, आत्मा का बल नहीं होता।
9. देवता कौन है? जो आत्मा को जानते हैं।
10. दैत्य कौन है? जो अपने शरीर के पालन-पोषण में लगे रहते हैं। जिन्हें ज्ञान और विवेक नहीं होता।
11. वह कर्म अवश्य करना चाहिए जिससे मनुष्य का जीवन ऊँचा बन जाएँ।
12. हमें देवताओं की पूजा करनी है, तो आज हमें दुर्गन्धी के स्थान पर सुगन्धी की स्थापना करनी है।
13. देवता वह है जो दूसरे की उन्नति चाहते हैं, जो दूसरों को महान् बनाना चाहते हैं।
14. अन्तःकरण वह पदार्थ है, वह स्थान है जिसमें हमारे पाप, पुण्य, कर्म विराजमान रहते हैं।
15. केवल मानव के द्वारा मानवता है, जो सर्वज्ञ है, नहीं तो इस संसार में सब कुछ व्यर्थ है।

।। ओ३म् ।।

। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

राष्ट्र कल्याणार्थ सप्तम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ

दिनांक 10 जनवरी 2021 रविवार से 17 जनवरी 2021 रविवार तक

यज्ञस्थलीः देवभूमि, मौहल्ला तिहाई, ग्राम खरखौदा, (मुण्डा महादेव मन्दिर के पास) मेरठ

–: निमन्त्रण पत्र :–

प्रिय आत्मीय स्वजनों,

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से एवम् आदि गुरु पूज्य ब्रह्मा जी महाराज के परमप्रिय ज्येष्ठ शिष्य पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (त्रेताकालीन शृङ्गी ऋषि महाराज जी) की पावमानी प्रेरणा एवम् आशीर्वाद से ''याग प्रचार समिति'' ग्राम खरखौदा के तत्वावधान में **राष्ट्र कल्याणार्थ सप्तम् चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ** वैदिक परम्परा के अनुसार आदि ऋषियों द्वारा निर्धारित कर्मकाण्ड पद्धति द्वारा सम्पन्न होगा। जिसको इस कलयुग में पुनः से पूज्यपाद गुरुदेव ने जागृत किया और अपनी ये दिव्य ज्योति अपने शिष्यों को इस विश्व में प्रकाशमान बनाए रखने के लिए प्रेरित किया। उसी मर्यादा को सम्पन्न एवम् उर्ध्वागति प्रदान करते हुए प्राणी मात्र के जीवन की जीवन सत्ता को सम्पन्न बनाने के लिए इस महायज्ञ का आयोजन देवभूमि, मौहल्ला तिहाई, ग्राम खरखौदा में आप सबके सहयोग से अत्यन्त श्रद्धा व हर्षोल्लास से पाँच वेदियों पर सम्पन्न होगा। अतः आपसे नम्र निवेदन है कि इस महायज्ञ में प्रातः व साँय समयानुसार अपने परिवार सम्बन्धी व ईष्ट मित्रों सहित उपस्थित होकर तन, मन, धन से आहुति प्रदान करते हुए अपने जीवन के मार्ग को प्रशस्त करें।

यज्ञ के ब्रह्मा – आचार्य श्री गुरुवचन शास्त्री जी, लाक्षागृह, बरनावा।

आचार्य एवम् वेदपाठी – श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय लाक्षागृह, बरनावा एवम् ब्रह्मचारिणी द्रोणस्थली आर्षकन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून।

–: कार्यक्रम :–

दिनांक 10 जनवरी रविवार 2021 से 17 जनवरी रविवार 2021 तक

प्रातः 7:15 बजे ओ३म् ध्वजारोहण (प्रथम दिवस) एवम् ब्रह्मयज्ञ (सन्ध्या)

प्रातः 8:00 बजे से **11:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

सायं: 2:15 बजे से **5:15 बजे** तक यज्ञ व प्रवचन

दिनांक 17 जनवरी रविवार 2021 प्रातः

प्रातः 8:00 बजे से **11:00 बजे** तक यज्ञ और महायज्ञ की पूर्णाहुति तत्पश्चात् प्रवचन एवं आशीर्वाद शान्ति पाठ व ब्रह्मभोज।

निवेदक समस्त खरखौदा निवासी

॥ ओ३म् ॥

विनम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (पूर्व जन्म के शृङ्गी ऋषि) की तपोस्थली लाक्षागृह बरनावा की पावन भूमि पर उनके द्वारा स्थापित आश्रम, गुरुकुल व गौशाला संचालित हो रहे हैं। आश्रम पर प्रति वर्ष रक्षा बन्धन, गुरुदेव के जन्मोत्सव पर सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ एवम् फाल्गुन मास में पाँच यज्ञशालाओं पर चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाता है तथा गुरुकुल में 100 के लगभग ब्रह्मचारी छठी से बारहवीं तक निःशुल्क शिक्षा ग्रहण करते हैं एवम् गौशाला में भी 40 के लगभग गौवंश हैं। इन कार्यों के लिए 6 अध्यापक व पाँच कर्मचारी भी संस्था की ओर से कार्यरत हैं। गुरुजी के समय से ही ये सब आयोजन आप सब दानियों के सात्त्विक दान से सम्पन्न हो रहे हैं। कोरोना महामारी मे लॉक डाउन के समय भी 2-3 अगस्त (रक्षा बन्धन) एवं 4-5 सितम्बर (गुरुदेव का जन्मदिन) को भी विधि-विधान से सामवेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन हुआ है। लेकिन प्रशासन की अनुमति न मिलने के कारण श्रद्धालु, यज्ञ-प्रेमी, दानदाता उक्त यज्ञों में न तो भाग ले सके और न ही अपना सहयोग प्रदान कर सके। उक्त कारण वर्तमान समय में आश्रम संचालन में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ रहा है। इस कारण आप सभी श्रद्धालु यज्ञ-प्रेमियों से विनम्र-निवेदन है कि अपनी श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार संस्था के निम्न खाता संख्या में अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

श्री गाँधी धाम समिति लाक्षागृह बरनावा (बागपत)

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया बरनावा (बागपत)

खाता संख्या : 11650180365 **IFC कोड :** SBIN0006602

—: निवेदक :—

यशोधर्मा सोलङ्की	**राजपाल त्यागी**	**ठा. वीर सिंह**
प्रधान	मन्त्री	कोषाध्यक्ष
विनोद शास्त्री	**गुरुवचन शास्त्री**	**अरविन्द शास्त्री**
प्रधानाचार्य	सहायक अध्यापक	सहायक अध्यापक

एवम् समस्त गुरुकुल परिवार

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

आयुष्मति अन्वेषिका

परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से एवम् पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के शुभाशिर्वाद से श्रीमति राजकुमारी त्यागी धर्मपत्नी श्री यतेन्द्र त्यागी निवासी ग्राम चिरथावल जिला मुजफ्फरनगर, उ.प्र. ने अपनी पौत्री आयुष्मति अन्वेषिका के प्रथम जन्मदिन के शुभागमन पर वैदिकता से सम्पन्न परिवार ने 1100 रु. का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन कार्य को बल प्रदान करने के लिए अर्पित किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

कन्या की माता श्रीमति ऋचा त्यागी एवम् पिता डॉ. आलोक त्यागी जी सुपौत्र श्रीमति चन्द्रकला त्यागी निवासी राजनगर एक्सटेंशन द्वारा वैदिक परम्परा की सम्पन्नता का निर्वाह परिवार पूर्वजों की शिक्षा के रूप में निरन्तर चला आ रहा है और उसको और अधिक पवित्रता से सम्पन्न करने का सौभाग्य माता श्रीमति ऋचा त्यागी को अपने बाबा श्री कालूराम त्यागी जी व माता-पिता श्रीमति रश्मि त्यागी एवम् गुरुवचन शास्त्री जी की छत्रछाया में धरोहर के रूप में बाल्यकाल से प्राप्त होता रहा है। विदुषी माताएँ ही श्रेष्ठ सन्तान को राष्ट्र को अर्पित करने में पुरातनकाल से अग्रणीय रही हैं।

सौभाग्यशाली शिशु को जन्मदिन की शुभकामनाएँ देते हुए समस्त परिवार की सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए समिति ईश्वर से कामना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

स्मृति

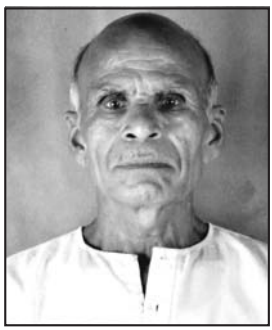

स्वर्गीय श्री धर्मवीर त्यागी

श्री विकास त्यागी सुपुत्र स्वर्गीय श्री धर्मवीर त्यागी निवासी ग्राम खड़खड़ी, हापुड़, गाजियाबाद ने अपने पिताश्री की प्रथम पुण्य तिथि दिनाँक 31 दिसम्बर 2020 के आगमन पर श्रद्धावश अपने पितरों की स्मृति में पुण्य कार्य की भावना को ओत-प्रोत बनाए रखने के लिए 1100 रुपये का सात्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य को निरन्तर गतिशील बनाए रखने के लिए प्रदान किया है। जिससे कि वैदिक ज्ञान की गङ्गा निरन्तर जन-कल्याण के लिए प्रवाहित होती रहे। समिति इस सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रकट करती है।

श्री त्यागी जी अपने जीवन में किसी कार्य में सँलग्न रहते हुए भी धार्मिक कार्यों में निरन्तर रूचि लेते हुए अपने ज्ञानवर्धन को ऊर्ध्वागति में ले जाने का जीवनभर प्रयास करते रहे। श्री बलवीर सिंह त्यागी बरनावा, बागपत के अनुज पुत्र श्री दिनेश त्यागी के सङ्ग अपनी प्रिय सुपुत्री अर्चना का पाणिग्रहण का सौभाग्य प्राप्त करने के पश्चात् पूज्यपाद गुरुदेव कृष्णदत्त जी महाराज के द्वारा दर्शाए गए क्रियाकलापों से भी जुड़ गए और उनके प्रवचनों का अध्ययन करते हुए अपने परिवार को यज्ञों के द्वारा सम्पन्न बनाने में सँलग्न हो गए। जीवन में सरल स्वभाव, व्यवहार-कुशल रहते हुए बड़ी ईमानदारी व निष्ठा के साथ अपनी गृहस्थी को उच्च संस्कार देने में आनन्द विभोर रहते थे परन्तु उनके अकस्मात् गमन से समस्त परिवार अभी तक विचलित है ईश्वर परिवार को उनके अभाव की पूर्ति को सहन शक्ति प्रदान करते हुए जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल बनाने की शक्ति से सम्पन्न करें।

समिति पुनः से समस्त परिवार को सुख, शान्ति, दीर्घायु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4202763
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज का हमारा वेद का पाठ, यह उच्चारण करता चला जा रहा था। हमारे यहाँ उस परमपिता परमात्मा की महिमा का जहाँ गुणगान गाया जाता है, तो वास्तव में जब उसको तत्त्व-तत्त्व से विचारने लगते हैं तो हमें यह प्रतीत होने लगता है कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड वसुन्धरा का स्वरूप माना गया है। क्योंकि वसुन्धरा महामना प्रभु को भी कहते हैं, जिसके गर्भस्थल से यह सर्वत्र जगत विराजमान हो रहा है, जिसकी प्रक्रियाओं से यह पृथ्वी क्रियामान हो रही है, सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी के आश्रित भ्रमण कर रहा है। आज हम उस परमपिता परमात्मा को भी वसुन्धरा के रूपों में परणित किया करते हैं और उसका गुणगान गाते हैं गुणों का अनुवाद करते हुए कहा करते हैं कि वह जो प्रभु है जो संसार का रचयिता है, जो क्रियात्मक क्रिया में ला रहा है परन्तु वही जगत में व्याप रहा है उसी की महान् ज्योति से हम सर्वत्र ब्रह्माण्ड में, सर्वत्र प्राणी, प्राणी मात्र उसी की ज्योति से व्याप रहा है, उसी के आँगन में रमण कर रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 49 : अंक : 576
जनवरी 2021

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-01-2021
Published on 5th day of the same month